20

''दूर देश में''

1 शमूएल 27–2 शमूएल 2

संसार की सबसे अधिक प्रचलित लघु कहानी का आरज़्भ इन शज़्दों से होता है:

> फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपज़ि में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपज़ि बांट दी। और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपज़ि उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा: उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा। और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था (लूका 15:11–16)।

इस नौजवान ने घर ज़्यों छोड़ा था? शायद उसे अपने पिता द्वारा लगाई गई बंदिशें स्वीकार नहीं थीं। शायद वह काम से और अपनी जिज़्मेदारी से ऊब गया था। शायद वह दुनिया देखना चाहता था। जो भी हो, वह एक दूर देश में चला गया जिसका परिणाम भयंकर हुआ।

मैं जब इस प्रसिद्ध कहानी पर विचार करता हूं तो मेरा ध्यान उन लाखों–करोड़ों लोगों पर जाता है, जो उड़ाऊ पुत्र की तरह करते हैं। मैं उन जवान पुरुषों तथा महिलाओं के बारे में सोचता हूं जिनका पालन–पोषण परमेश्वर का भय रखने वाले माता–पिता की देख–रेख में हुआ, जिन्हें लगता है कि वे जीवन में कुछ खो रहे हैं, जो पाप के दूर देश में चले जाते हैं। मेरा ध्यान हर साल उन लाखों जवानों की ओर जाता है जिन्हें टोका–टोकी पसन्द नहीं और घर से भागकर अपने माता–पिता का दिल तोड़ते हैं। मेरा ध्यान उन लोगों की ओर भी जाता है जो यह मानते हैं कि वे नशे करके और शराब पीकर परेशानियों से मुज़्त हो जाएंगे।

नि:संदेह केवल जवान लोग ही दूर देश में जाने की कोशिश नहीं करते। पति और पत्नियां भी, जिन्हें लगता है कि वे विवाह करके फंस गए हैं, अपने पति या पत्नी से छुटकारा पाकर अपने जीवन को नरक बना लेते हैं। अपनी जिज़्मेदारियों से तंग आकर कई माता या पिता अपने परिवारों को छोड़ देते हैं। मसीही लोग जो यह मानते हैं कि ''जीवन का सारा रोमांच चला गया'' सुबह उठकर हमें चौंका देते हैं, जब हम उनके जीवन को सांसारिक

देखते हैं। प्रचारकों, ऐल्डरों तथा डीकनों की बुराइयां पता चलने पर कलीसिया की बदनामी होती है।

हम में से कोई भी ऐसा नहीं है, जिसने कभी बुराई न की हो। मसीह की देह के अंगों के रूप में, हम भला करते हुए ''हियाव छोड़'' सकते हैं (गलातियों 6:9) और निष्क्रियता के दूर देश में जा सकते हैं। आज्ञा न मानने तथा अपनी सज़्पज़ि बर्बाद करने के लिए दूर देश में जाने वाला उड़ाऊ पुत्र पहला या अंतिम व्यज़्ति नहीं था। न ही वह उसके परिणामों को भुगतने वाला पहला या अंतिम व्यज़्ति था।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी पर विचार करते हुए, मेरा ध्यान दाऊद की ओर और सबसे अजीब बात जो उसके जीवन की सबसे अस्वाभाविक बात है,पर भी जाता है कि वह पलिश्तियों के साथ सोलह महीने तक रहा। पिछली पुस्तक में हमने 1 शमूएल 26 का अध्ययन किया था जो दाऊद द्वारा शाऊल को दूसरी बार छोड़ने के सज़्बन्ध में है। अध्याय 27 के आरज़्भ में लिखा है:

> और दाऊद सोचने लगा, अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नाश हो जाऊंगा; अब मेरे लिए उज़म यह है कि मैं पलिश्तियों के देश में भाग जाऊं; तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इस्राएल के देश से किसी भाग में फिर न ढूंढ़ेगा, यूं मैं उसके हाथ से बच निकलूंगा। तब दाऊद अपने छह सौ संगी पुरुषों को लेकर चला गया, और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश के पास गया। और दाऊद और उसके जन अपने अपने परिवार समेत गत में आकीश के पास रहने लगे। ... (आयतें 1-3)।

जब शुरू-शुरू में दाऊद भगौड़ा हुआ था, तो उसने गत के राजा आकीश के राज्य में शरण मांगी थी। फिर दाऊद ने पागल होने का ढोंग करके बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई थी (1 शमूएल 21:10-15)। अब लगभग 9 साल बीत चुके थे और हालात बदल गए थे। दाऊद के प्रति शाऊल की घृणा जग जाहिर थी। इसके अलावा दाऊद अपने साथ काफी सेना लेकर आया था जिसे शायद आकीश के अधिकार में देने की मंशा थी। इस बार दाऊद का स्वागत गत में अलग ढंग से हुआ, सो वह अपने आदमियों तथा उनके परिवारों सहित पलिश्तीन में रहने लगा। ''पलिश्तियों के देश में रहते-रहते दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए'' (27:7)।[1]

यह समझने के लिए कि यह कितना अटपटा था, यह समझना आवश्यक है कि पलिश्ती कौन थे और वे परमेश्वर के लोगों के कितने बड़े शत्रु थे।[2] वे कनान देश में दक्षिण पश्चिमी भाग भूमध्य सागर के तट पर रहते थे (पृष्ठ 84 का मानचित्र देखें)। वे दागोन (1 शमूएल 5:2; आधा मनुष्य, आधा मछली) और आश्तोरेत (1 शमूएल 31:10) की पूजा करने वाले मूर्तिपूजक थे। पलिश्तीन देश क्षेत्रफल में तो छोटा था (यहोशू 13:2 से), परन्तु व्यापारिक केन्द्र होने के कारण काफी लोगों को उसका लाभ होता था जिस कारण वे शज़्तिशाली और प्रभावशाली लोग थे (नोट 1 शमूएल 13:5)।

यहोशू द्वारा इस्राएलियों को कनान में ले जाने के लिए उनकी अगुआई के समय पलिश्तियों के बड़े नगरों पर नियन्त्रण नहीं पा सके थे।[3] न्यायियों के अशांत काल में पलिश्ती लोग बार-बार इस्राएल के दक्षिणी भाग पर कब्ज़ा कर लेते थे (न्यायियों 10:6, 7 आदि)। एक समय तो उन्होंने देश पर चालीस वर्ष तक शासन किया था (न्यायियों 13:1)। पलिश्तियों के स्वभाव को समझने के लिए, एक पलिश्ती हसीना दलीला की धूर्तता (तु. न्यायियों 16:4, 5) और शिमशोन की सामर्थ चले जाने के बाद पलिश्तियों द्वारा उससे किए गए क्रूर मज़ाक को याद करें।

शमूएल के समय में, पलिश्तियों ने परमेश्वर के लोगों पर एक बड़ी विजय पाकर वाचा के संदूक पर कब्ज़ा कर लिया था, जो इस्राएलियों के धर्म का सबसे पवित्र प्रतीक था। पलिश्तियों ने वाचा का संदूक अशदोद में ले जाकर उसे अपमानजनक ढंग से दागोन के मन्दिर में रख दिया था।[3] शाऊल के गद्दी पर बैठने के समय यहूदा के केन्द्र गिबा में पलिश्तियों की छावनी थी (1 शमूएल 10:5), जहां से उन्होंने सब दिशाओं से इस्राएल पर आक्रमण किया (1 शमूएल 13:16-18)। इस शृंखला में हमने पलिश्तियों के साथ कुछ युद्धों पर ध्यान दिया है। शृंखला समाप्त होने से पहले हम और युद्धों पर भी विचार करेंगे।

यदि पलिश्ती लोग अपने उद्देश्य में सफल हो जाते, अर्थात परमेश्वर के चुने हुए लोगों को खत्म कर देते तो यहोवा का नाम लेने वाला कोई नहीं बचना था। मन यह विचार करके परेशान हो उठता है कि दाऊद इन ईश्वर-रहित अर्थात मूर्तियों की पूजा करने वाले लोगों के बीच रहने के लिए गया। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह गया। यीशु द्वारा उड़ाऊ पुत्र की कहानी बताए जाने से एक हज़ार साल पहले दाऊद ''एक दूर देश को चला गया'' जो भौगोलिक दृष्टि से तो नहीं परन्तु नैतिक, आत्मिक तथा धार्मिक दृष्टि से अवश्य दूर था। हम भी कभी-कभी उसकी तरह उससे, जो हमने सोचा होता है, उससे जो हमारा विश्वास होता है अर्थात अपने पहले जीवन से दूर ''एक दूर देश को चले'' जाते हैं।

इस पाठ में हम तीन प्रश्न पूछेंगे: (1) दाऊद ने ऐसा ज़्यों किया? (2) इसके ज़्या परिणाम हुए? (3) दाऊद वापस कैसे आ पाया? हो सकता है कि इससे हमें इस बारे में कि हम दूर देश में ज़्यों जाते हैं और वहां से वापस कैसे आ सकते हैं,कुछ सीख मिल जाए।

जाने के कारण (1 शमू. 27:1-3)

पहला प्रश्न जो हमें पूछना चाहिए वह यह है कि ''दाऊद पलिश्तियों के साथ रहने के लिए ज़्यों गया?'' इसका स्पष्ट उज़र है कि वह शाऊल से बचना चाहता था (27:1)।[4] उस दृष्टिकोण से देखने पर, दाऊद के निर्णय में सांसारिक धूर्तता दिखाई देती है। दाऊद को शाऊल से छुटकारा मिल *गया* था (27:4)। कई सालों बाद पहली बार उसे और उसके परिवार को चैन नहीं था और वे सामान्य जीवन नहीं बिता सकते थे।

परन्तु 27:1 पर टिप्पणी करते हुए एक लेखक ने कहा है, ''दाऊद अपने विश्वास में लड़खड़ा जाता है ... और ... उसे लगता है कि उसे इस्राएल की सीमाओं के बाहर सुरक्षा ढूंढ़नी चाहिए।''[5] ''दाऊद अपने विश्वास में लड़खड़ा जाता है''? जितना अधिक मैं इस

घटना का अध्ययन करता हूं, उतना ही मुझे यकीन होता है कि यह टिप्पणी सही है। इन तथ्यों पर विचार करें: परमेश्वर ने दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि अगला राजा वही होगा। योनातन, शाऊल और अबीगैल सबको विश्वास था कि दाऊद ही होने वाला अगला राजा है। शाऊल लगभग नौ साल तक दाऊद का पीछा करने के बावजूद उसे पकड़ नहीं सका था ज़्योंकि ''परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया'' था (1 शमूएल 23:14)।

दाऊद को यह सब मालूम था। वह अज़्सर अपने जीवन में होने वाली बातों में परमेश्वर का हाथ बताता था। यह सिद्ध करने के लिए कि किसी दिन शाऊल के हाथों उसका नाश *नहीं* होगा दाऊद को इससे बढ़कर ज़्या प्रमाण चाहिए था (27:1)?

तो भी, मैं दाऊद के रातभर परेशान रहने और सकंट भरी सुबह में उठने की कल्पना कर सकता हूं। ठण्डी रोटी और मीट का नाश्ता करने के लिए आग सेंकते हुए उसने अपने सिपाहियों की बदहाली और अपनी पत्नियों के उतरे हुए चेहरे देखे तो उसने विचार किया, ''ऐसा कब तक चलता रहेगा कि हम यह प्रतीक्षा करते रहें कि शाऊल की सेना किसी समय आकर हम पर हमला कर दे। लानत है ऐसी ज़िन्दगी पर। शाऊल को तो तब तक शांति नहीं मिलेगी जब तक वह मुझे मार न डाले।'' आह भरते हुए उसने पश्चिम की ओर देखा। ''हमारे पास कोई चारा नहीं है। हमें देश छोड़ना ही होगा।'' समय से पहले बूढ़े हो चुके आदमी की तरह वह धीरे-धीरे उठा और सिपाहियों को आदेश देने लगा।

> और दाऊद सोचने लगा, अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नाश हो जाऊंगा; अब मेरे लिए उज़म यह है कि मैं पलिश्तियों के देश में भाग जाऊं; तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इस्राएल के देश से किसी भाग में फिर न ढूंढ़ेगा, यूं मैं उसके हाथ से बच निकलूंगा (27:1, 2)।

ध्यान दें ''दाऊद *सोचने* लगा।'' दाऊद ने परमेश्वर की इच्छा नहीं जानी बल्कि उसने अपने मन से बातें करके विचार किया। फिर ध्यान दें कि दाऊद के विचार अपने पर केन्द्रित थे: ''अब *मैं* किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नाश हो जाऊंगा; अब *मेरे* लिए उज़म यह है कि *मैं* पलिश्तियों के देश में भाग जाऊं; तब शाऊल *मेरे* विषय निराश होगा, और *मुझे* इस्राएल के देश से किसी भाग में फिर न ढूंढ़ेगा, यूं *मैं* उसके हाथ से बच निकलूंगा।'' जब आपके विचार आत्मकेन्द्रित हो जाते हैं और आपकी दिलचस्पी प्रभु के काम की भलाई के बजाय अपनी भलाई में हो जाती है तो दो परिणाम होते हैं: आपका विश्वास लड़खड़ा जाएगा और दूर देश आपको अच्छा लगने लगेगा।

दूर देश में जाना विश्वास की समस्या के कारण ही होता है, चाहे वह माता-पिता में विश्वास की कमी हो, अपने जीवन साथी में विश्वास की कमी हो, लोगों पर विश्वास की कमी, या अपने आप में विश्वास की कमी। परन्तु इस सब का कारण *परमेश्वर* में विश्वास की कमी अर्थात उसके वचन में दिखाए गए उसके प्रबन्धों और परमेश्वर के प्रबन्ध में विश्वास की कमी है।

मन के लिए राहत (1 शमू. 27:4)

यह ज़ोर देने के बाद कि दाऊद का पलिश्तीन में जाने का मुख्य कारण उसका लड़खड़ाता हुआ विश्वास था, मेरी अगली बात से बहुत से लोग हैरान हो जाएंगे कि दाऊद के निर्णय का *तुरन्त* परिणाम वही हुआ जिसकी उसे बड़ी चाहत थी, उसे थोड़ी देर के लिए *राहत* मिल गई। 27:4 में हम पढ़ते हैं, ''जब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है, तब उसने उसे फिर कभी न ढूंढ़ा।'' दाऊद को अब सुबह उठने से पहले अपने आगे-पीछे देखने की आवश्यकता नहीं थी। वह और उसका परिवार सज्य लोगों की तरह किसी घर में रह सकते थे। वह बिना भय के कि कोई रात को उसका गला न काट दे, चैन से सो सकता था।

दूर देश में जाने का यही आकर्षण है: अज़्सर वहां असहनीय परिस्थिति से तुरन्त राहत मिल जाती है। जब उड़ाऊ पुत्र दूर देश में चला गया तो उसे कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था; किसी ने उससे पैसों का हिसाब नहीं मांगना था; न ही उसकी कोई ज़िज़्मेदारी होनी थी। जब कोई अपने आप को विवाह के बंधन में फंसा हुआ पाता है और पीछा छुड़ा लेता है तो उसे तुरन्त राहत महसूस होती है। जब माता-पिता होने का बोझ परेशान करता है और कोई उन जिज़्मेदारियों से पीछा छुड़ा लेता है तो उसे लग सकता है कि मन को शान्ति मिल गई। जब कोई जीवन से परेशान होकर नशे और शराब की दुनिया में डूब जाता है तो थोड़ी देर के लिए उसकी पीड़ा का पता नहीं चलता और उसे बड़ा अच्छा लगता है। जब कोई प्रभु की सेवा करते-करते ऊब जाता है और कहता है, ''मेरी जगह पढ़ाने के लिए या यह काम करने के लिए किसी और को लगा दो! मैं जा रहा हूं!'' तो राहत का अहसास सुख देने वाला लग सकता है।

ज़्या मैं यह सुझाव दे रहा हूं कि लोग राहत पाने के लिए दूर देश में चले जाएं? नहीं, मैं तो ईमानदार बनने की कोशिश कर रहा हूं। इब्रानियों के लेखक ने ''पाप के सुख'' (11:25) की बात कही है और हम भी यह मान सकते हैं कि पाप लोगों को आकर्षित करता है। वे ''सुख'' कई बार बाहर से उतने नहीं लगते, जितने अन्दर से होते हैं। कई बार वे आत्मा को संतुष्ट करने की तरह शरीर को संतुष्ट नहीं कर पाते।

इस प्रकार राहत पाने में ज़्या समस्या है? इसमें दो तरह की समस्या है। पहली, परमेश्वर की आज्ञा तोड़कर पाई गई राहत क्षणिक होती है। इब्रानियों के लेखक ने ''पाप के सुख'' की बात करते हुए उन्हें ''पाप में *थोड़े दिन* के सुख'' कहा, जिसका अर्थ यह है कि वे केवल कुछ दिन या समय के लिए ही हैं। इसी लिए मैंने कहा कि, ''दाऊद के निर्णय के *तुरन्त* परिणामस्वरूप ... उसे थोड़ी देर के लिए *राहत* मिल गई।''

दूसरा, जब कोई परमेश्वर की आज्ञा तोड़कर राहत पाता है तो उसे उस राहत की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। शायद आपने जैरी ज़्लॉवर द्वारा बताई गई हास्यास्पद कहानी सुनी होगी,जिसमें पेड़ पर एक आदमी जंगली बिल्ली को ऐसे पकड़ता है कि नीचे खड़ा आदमी उस पर सीधा निशाना लगा सके। आखिर पेड़ पर चढ़ा आदमी अपने मित्र पर चिल्लाता है: ''हममें से किसी पर तो गोली चला ताकि दोनों में से एक को तो राहत मिल

जाए!'' जैरी यह कहानी सुनाकर लोट-पोट कर देता है हमें ''जंगली बिल्ली को पूंछ'' से पकड़कर रखने वाले आदमी पर तरस आता है। परन्तु हम समझते हैं कि वह आदमी राहत पाने के लिए कुछ अधिक ही कीमत चुकाने को तैयार था।

इस समय ऐसी परिस्थिति हो सकती है, जो आपको असहनीय लगती हो। आप सोच रहे हो सकते हैं, ''मैं कुछ भी करने को तैयार हूं, बस मुझे छुटकारा मिलना चाहिए।'' सावधान, कहीं ऐसा तो नहीं कि आप उस राहत को पाने के लिए बहुत अधिक कीमत चुका रहे हैं!

जाने के अप्रत्यक्ष प्रभाव (1 शमू. 27:5-30:6)

दाऊद के निर्णय से तुरन्त अस्थाई राहत मिल गई। आइए अब *दूरगामी* परिणामों पर नज़र डालने हैं।

उसने ज़िन्दा रहने के लिए आज़ादी खो दी

पलिश्तियों की छावनी में जाने से पहले दाऊद स्वतन्त्र था। यह स्वतन्त्रता तनाव से भरी हुई थी, परन्तु थी यह स्वतन्त्रता। अब आश्रय लेने के लिए उसने अपने हितकारी, गत के राजा आकीश के पास अपनी राजभक्ति गिरवी रख दी। 27:5 में दाऊद ने अपने आप को आकीश का ''दास'' (1 शमूएल 28:2; 29:8 भी देखें) कहा। 9 व 10 आयतों में दाऊद को गत नगर से चले जाने के बावजूद अपनी गतिविधियों की जानकारी आकीश को देनी होती थी।[6] दाऊद जैसे स्वतन्त्र व्यक्ति के लिए मज़ाक में भी आकीश के अधीन होना अपमानजनक रहा होगा।

जवान व्यक्ति जब घर से निकल जाता है कि वह संसार के लोगों के साथ ऐश कर सके, तो वह दावा करता है, ''मैं आज़ाद होना चाहता हूं!'' आमतौर पर जब कोई व्यक्ति शराब पीना या कोई नशा करना शुरू करता है तो वह यही कहता है, ''तुम मुझे समझ ने वाले कौन होते हो; अपनी मर्ज़ी का मालिक मैं खुद हूं!'' अक्सर जब कोई पति या पत्नी से या बच्चों से छुटकारा चाहता है तो वह यही पुकारता है, ''मैं खुली हवा में सांस लेना चाहता हूं!'' जो बात इन लोगों को समझ नहीं आती, वह यह है कि वे पाप के भयंकर बंधन में पड़ने के लिए आजादी की इन लाभदायक बंदिशों को त्याग रहे हैं (यूहन्ना 8:34; रोमियों 6:16)। उड़ाऊ पुत्र आज़ादी की तलाश में दूर देश में गया हो सकता है, परन्तु आखिर उसने अपने आप को ''उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा'' पाया (लूका 15:15)।

उसने समझौते के लिए परमेश्वर की निकटता त्याग दी

पलिश्तीन में जाने के बाद परमेश्वर के साथ दाऊद का सम्बन्ध कम हो गया। लगभग एक वर्ष तक दाऊद के परमेश्वर से पूछने की बात नहीं मिलती। दाऊद के वहां रहने के समय का उसका कोई भजन नहीं मिलता। दाऊद ने गाना बंद कर दिया था। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। उन लोगों के सामने जिन्हें वह पसन्द न हो खुलकर उस परमेश्वर की

आराधना कैसे की जा सकती है? उन लोगों में जिन्हें दस आज्ञएं तोड़ना अच्छा लगता था, दस आज्ञाओं के अनुसार चलना कैसे सज़्भव था।

यदि आप संसार की तरह जीने का निर्णय करते हैं तो यह परमेश्वर के साथ आपके सज़्बन्ध को बिगाड़ देगा (1 यूहन्ना 2:15)। यदि आप यह निर्णय लेते हैं कि जीवन की सबसे बड़ी बात आर्थिक रूप से सफल होना है, तो यह परमेश्वर के साथ आपके सज़्बन्ध को बिगाड़ देगा (मज़ी 6:24)। यदि आप अविश्वासियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं और विश्वासियों के साथ कोई संगति नहीं रखते तो यह परमेश्वर के साथ आपके सज़्बन्ध को बिगाड़ देगा (1 कुरिन्थियों 15:33)। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। संसार के साथ रहने के लिए आपको संसार की तरह चलना होगा, संसार की तरह काम करना होगा, और वही विश्वास करना होगा जो संसार करता है। आपको उनके साथ मिल जुलकर रहना होगा। परिणाम यह होगा कि आप परमेश्वर के बालक कम परन्तु संसार के ज्यादा लगने लगेंगे। दूर देश में जाने का यही मूल्य चुकाना पड़ता है।

शुगल के तौर पर मुझे जादू पसन्द है।[7] बचपन में मैंने बड़ा होने पर एक प्रोफेशनल जादूगर बनने का निर्णय लिया था। जब मैंने अपनी मां को बताया, तो उसने कुछ देर इस पर विचार करके मुझे यह प्रश्न करके रोक दिया था: ''पर तू जादू करेगा कहां?'' उस समय जादूगर को अच्छी कमाई करने के लिए नाइट ज़्लबों में काम करना पड़ता था। मेरी मां मानो मुझसे पूछ रही थी, ''ज़्या तू अपना सपना पूरा करने के लिए उस दूर देश में जाएगा?'' मुझे यह निर्णय लेने के लिए बड़ी अच्छी तरह से सिखाया गया था। फिर भी मैंने अपनी योजना पर मन में विचार किया। आज व्यावसायिक तौर पर मनोरंजन करने वालों के लिए बहुत से विकल्प हैं, परन्तु आज भी यही बात सत्य है कि मनोरंजन या रंगमंच का क्षेत्र एक दूर देश है जिसमें जाकर अपने विश्वास को खो देना आसान है। मैं मनोरंजन की दुनिया के दूर देश में जाकर ज़ी अपने विश्वास को कायम रखने वाले दर्जनभर लोगों के नाम बता सकता हूं कि वे अपने विश्वास में कायम नहीं रहे।

मैं किसी को कोई पेशा या उसकी पसन्द चुनने की आज्ञा देने की कोशिश नहीं कर रहा; परन्तु काम चाहे कोई भी हो, मेरा कहना है कि आप यह विचार अवश्य करें कि आपकी संगति किसके साथ है, उनका मानक ज़्या है और आप से ज़्या उज़्मीद रखी जाएगी। मेरा यह भी कहना है कि एक बार निर्णय लेने के बाद कि यदि आप अपने आप को प्रार्थना और स्तुति महिमा गाने वाले कम पाते हैं तो आप निकास द्वार की ओर चलकर नहीं, भागकर जा रहे हैं। इससे पहले कि परमेश्वर के साथ आपका सज़्बन्ध पूरी तरह नष्ट हो, निकल जाएं!

उसने धोखे के जीवन के लिए निष्ठा त्याग दी

दाऊद ने शाऊल से भागते हुए, पहले थोड़ी मूर्खता से काम लिया[8]; निराशा में उसने झूठ बोला था और धोखा दिया था। अंत में, अदुल्लाम की गुफ़ा में उसने अपनी निष्ठा पाकर भगौड़े के रूप में अगले आठ से अधिक वर्ष तक उस निष्ठा को बरकरार रखा था। उसके

आदमी और उसे जानने वाले उसका आदर करते थे (24:17)। परन्तु अब दाऊद ने दोहरा खेल शुरू किया; उसका सम्पूर्ण जीवन एक झूठ बन गया।

कुछ समय बाद दाऊद ने आकीश के पास जाकर कहा, ''यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो देश की किसी बस्ती में मुझे स्थान दिला दे जहां मैं रहूं; तेरा दास तेरे साथ राजधानी में क्यों रहे ?'' (27:5)। दाऊद ने ऐसा दिखाया कि वह राजा की तरह उसी नगर में रहने के योग्य नहीं है। वास्तव में वह राजा की चौकस नज़रों से बचना चाहता था ताकि वह गुप्त रूप से अपने काम कर सके।[9] झूठ और धोखा दोनों का मेल होने लगे।

आकीश ने दाऊद को गत के दक्षिण का एक नगर सिकलग[10] दे दिया।[11] दाऊद, उसके आदमी और उनके परिवार वहां चले गए। दाऊद और उसके आदमी पहले लोगों की रक्षा करके अपना निर्वाह करते थे; अब वे अपना निर्वाह सर्वनाश करके कर रहे थे। उन्होंने मवेशी और मछरों को नहीं मारा था बल्कि लोगों का सर्वनाश किया था।

> और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गशूरियों, गिर्जियों, और अमालेकियों पर चढ़ाई की; ... और स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा, और भेड़-बकरी, गाय बैल, गदहे, ऊंट, और वस्त्र लेकर लौटा, ... (27:8, 9)।

गशूरी, गिर्जी और अमालेकी सिकलग के दक्षिण में रहते थे। गशूरी लोग पलिश्तीन और मिस्र के बीच पड़ने वाले जंगल में रहने वाले घुमक्कड़ थे।[12] गिर्जियों के बारे में हम कुछ नहीं जानते; उनके केवल नाम का ही उल्लेख है। अमालेकी सबसे प्रसिद्ध थे। वे एसाव के वंशज बदुइन के लोग थे। वे एक बहुत बड़ी जाति अर्थात शक्तिशाली लोग बन चुके थे।[13] तीनों कौमें पलिश्तीन और इस्राएल के शत्रु थीं।[14]

कोई तर्क दे सकता है कि दाऊद ने वही किया जो यहोशू ने इस्राएलियों को करने के लिए कहा था कि वे देश में रहने वाले मूर्तिपूजकों में से निकल आएं या यह कि दाऊद ने वही किया जो शाऊल को करने के लिए कहा गया था कि अमालेकियों का ''सत्यानाश'' कर दे (1 शमूएल 15:3, 8, 9)। परन्तु हमारा पाठ कहता है कि दाऊद द्वारा नर-नारी (और सम्भवतया हर बच्चे) को मारना परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए नहीं बल्कि अपना रास्ता बनाने के लिए था। ध्यान दें 27:11: ''दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुंचाए; उसने सोचा था, कि ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा किया है। वरन जब से वह पलिश्तियों के देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही है।'' यह बेरहमी से और योजनाबद्ध ढंग से की गई हत्या थी।

मान लो कि आप जंगल में से गुज़र रहे हैं। आप गर्मी से परेशान, थके हुए और प्यासे हैं। थोड़ा आगे आपको एक नगर दिखाई देता है। वहां कुछ आराम करने की उम्मीद से आप जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हैं; परन्तु निकट पहुंचने पर आपको कुछ गड़बड़ लगती है। वहां केवल कुत्तों के भौंकने और आकाश पर मंडराते गिद्दों का ही दृश्य देखने को मिलता है। नगर से बाहर पहुंचने पर आपको बदबूदार और गल घोंटू हवा बहती हुई मिलती है। सांस रोककर आप कुछ कदम आगे जाते हैं और आपको मुख्य सड़क दिखाई

देती है। यह दृश्य रात का है। हर जगह मलबे के नीचे लाशें दबी पड़ी हैं। गली के एक ओर लाल लहू की नाली बहती है। आवारा कुत्ते और मांसखोर पक्षी अपनी दावत पर झगड़ रहे हैं। गांव से बाहर निकलते-निकलते आपका मन उल्टी करने को करता है। फिर से आगे बढ़ने पर आपके मन में एक प्रश्न आता है: ''यह सब किसने किया होगा? क्यों किया होगा?''

दाऊद ने; अर्थात उसी ने जो ''परमेश्वर के मन के अनुसार'' है, जिसने दूर देश में जाने की गलती की थी, यह किया।

इस दुखद कहानी का अंत यहीं नहीं होता। युद्ध की लूट लेकर दाऊद सबसे पहले राजा आकीश को बताने के लिए गत में गया (और सम्भवतया उसे उसका हिस्सा दिया होगा)। जब दाऊद अंदर आया तो आकीश ने पूछा, ''आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं की?'' दाऊद का उज़र था, ''यहूदा यरहमेलियों और केनियों की दक्षिन[15] दिशा में'' (27:10)।

यह बेर्शबा से लेकर सीनै प्रायद्वीप की पहाड़ियों तक फैला हुआ विशाल जंगली इलाका था (और है)। ''यरहमेलियों की दक्षिन दिशा'' हेब्रोन के निकट का जंगली इलाका होगा। यरहमेलियों का कालेबवंशियों से निकट और गहरा सम्बन्ध था (1 इतिहास 2; गिनती 13; यहोशू 14; 15)। ''केनियों की दक्षिन दिशा'' बेर्शबा के पूर्व का उजाड़ क्षेत्र होगा। केनी लोगों के मूसा के समय से इस्राएल के साथ सम्बन्ध थे; मूसा का ससुर यित्रो, केनी ही था (न्यायियों 1:16)।

अन्य शब्दों में, दाऊद ने आकीश को बताया कि वह इस्राएलियों और उनके सहयोगियों पर आक्रमण करने वाला है और आकीश ने उस की बात पर विश्वास कर लिया। आकीश को लगा कि दाऊद उसके लिए उपहार लाकर और इस ढंग से व्यवहार करके जिससे उसके लिए यहूदा में दोबारा जाना कभी सम्भव न होगा, उसकी दक्षिणी सीमा की रक्षा कर रहा है। मैं आकीश को प्रसन्नता से यह कहते देख सकता हूं, ''यह अपने इस्राएली लोगों की दृष्टि में अति घृणित हुआ है; इसलिए यह सदा के लिए मेरा दास बना रहेगा'' (27:12)। यह देखकर मन दुखी होता है कि दाऊद कितना झूठा बन चुका था और उसने राजा को कितनी चालाकी से मूर्ख बनाया। दाऊद शाऊल और नाबाल के कारण परेशान था, जिन्होंने उसे भलाई के बदले बुराई दी थी। अब उसने स्वयं आकीश के साथ वैसा ही किया था। दाऊद ने आकीश की मेहमाननवाजी का बदला उसे झूठ और धोखे के सिक्के लौटाकर दिया!

आप अपनी निष्ठा को त्यागे बिना दूर देश में नहीं जा सकते। आप ज़ोर दे सकते हैं कि आप वहां जाकर अपने मसीही मानदण्डों पर कायम रहेंगे। आप कह सकते हैं, ''मेरे लिए अभी जाना ठीक है, पर यह केवल थोड़े समय के लिए है। इससे पहले कि मुझे कोई हानि हो, मैं लौट आऊंगा।'' लिखकर रख लें: आप प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे।

उसने अस्पष्टता के लिए स्पष्ट उद्देश्य को त्याग दिया

अध्याय 28 के आरम्भ में, पलिश्ती लोग शाऊल तथा इस्राएल की सेना के विरुद्ध निर्णायक युद्ध की तैयारी कर रहे थे। आकीश ने दाऊद को बुलाया और उससे कहा,

''निश्चय जान कि तुझे अपने जनों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा'' (28:1)। प्राचीनकाल में पूर्व के आस-पास किसी देश की वेदी को स्वीकार करने के लिए सैनिक सेवा का दायित्व भी आवश्यक था।

दाऊद की इस दुविधा पर विचार करें। आकीश के साथ जाने से इन्कार करने का अर्थ दाऊद का कपट सामने आ जाना था जबकि जाने का अर्थ दाऊद का उस बात में शामिल होना था जिससे वह कई सालों से बच रहा था; उसे परमेश्वर के अज़िषिज़्त के विरुद्ध लड़ना था। कहने की आवश्यकता नहीं कि उसे अपने मित्र योनातन के विरुद्ध भी लड़ना पड़ता। परमेश्वर का कोई बालक जब दूर देश में चला जाता है तो उसे ऐसी ही दुर्दशा का सामना करना पड़ता है।

दाऊद का उज़र अस्पष्ट था: ''इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास ज़्या करेगा'' (28:2क)। आकीश ने दाऊद की बात को उसके समर्थन के प्रण के रूप में लिया और उज़र दिया, ''इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिए ठहराऊंगा'' (28:2ख)। अन्य शज़्दों में, ''मुझे तुझ पर विश्वास है, इसलिए मैं अपना प्राण तेरे हाथों में देता हूं!'' परन्तु दाऊद का यह कहने का अर्थ तो शायद यह था कि जल्दी ही ''पता चल'' जाएगा कि वह ज़्या कर सकता है। ज़्या मालूम कि दाऊद के यह कहने का ज़्या अर्थ था? दूर देश में, सब कुछ निशाने से बाहर हो जाता है।

पलिश्तीनी दूर उज़र की ओर शूनाम में अपनी सेनाएं इकट्ठी करने लगे (28:4),[16] जबकि इस्राएलियों ने गिलबो पर्वत की ढलानों पर, यिज़्रेल नगर के निकट, घाटी के पार छावनी लगा ली (28:4; 29:1 भी देखें)। अध्याय 29 आरज़्भ होने पर, पलिश्तीनी सेना का मुज़्य दल उज़र की ओर बढ़ रहा था। आयत 2 में पता चलता है कि दाऊद और उसके आदमी आकीश के सैनिकों के साथ आगे बढ़ रहे थे। वे अपेक तक पहुंचने तक आगे बढ़ते रहे, जो शूनेम से करीब चालीस मील दूर था। फिर वे अपनी टुकड़ियों को संगठित करने के लिए रुक गए (29:1)।

अपेक जाने के लिए कम से कम तीन दिन लगे (देखें 1 शमूएल 30:1)। दाऊद को उस दुर्दशा पर विचार करने के लिए तीन दिन लगे ज़्योंकि उसने दोहरा जीवन जीने का फैसला किया था। उसके मन में आने वाले विचारों की कल्पना करें: ''ज़्या करूं? मैं और मेरे आदमी परमेश्वर के अभिषिज़्त के विरुद्ध नहीं लड़ सकते। ... शायद हम लड़ सकते हैं, परन्तु शाऊल या योनातन में से किसी को छू नहीं सकते। नहीं, इसका अर्थ तो यह होगा कि हम अपने ही लोगों के विरुद्ध लड़ रहे हैं। और परमेश्वर ने मुझे दिखाया है कि मेरे लिए उसके अभिषिज़्त को हानि न पहुंचाना ही बड़ी बात नहीं है! मुझे दूसरों को भी उसे हानि पहुंचाने से रोकना है। ... हो सकता है कि हम जब लड़ाई में जाएं, तो मेरे आदमी और मैं लड़ाई शुरू होने पर, पलिश्तियों पर पीछे से और शाऊल की सेना पर आगे से आक्रमण कर देंगे। नहीं, इससे बात नहीं बनेगी ज़्योंकि जब हम शाऊल की सेना के पास पहुंचेंगे, तो वह उन्हें मुझे मारने की आज्ञा दे देगा। फिर हमें एक के बजाय दो सेनाओं से लड़ना पड़ेगा। ... या शायद मुझे आकीश को बता देना चाहिए कि मैं यह सब नहीं कर सकता। परन्तु यदि मैं

ऐसा करता हूं, तो सारी पलिश्ती सेना हम पर टूट पड़ेगी और हमारा नामो निशान मिटा देगी। ... या हम लड़ने का नाटक करें पर लड़ें न । दूसरी ओर, यदि हम अपना बचाव नहीं करते, तो हम आत्महत्या ही कर रहे होंगे। ... ज़्या करूं ? ज़्या करूं ? मैं ज़्या करूं ?!''

अपेक में, छावनी में अंतिम टुकड़ी के आने पर, पलिश्तीनी सेनापतियों ने देखा कि दाऊद और उसके आदमी आकीश के सिपाहियों में से थे। इसलिए उन्होंने क्रोधित होकर आकीश का सामना किया:

> तब पलिश्ती हाकिमों ने पूछा, उन इब्रियों[17] का यहां ज़्या काम है ? आकीश ने पलिश्ती सरदारों से कहा, ज़्या वह इस्राएल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो ज़्या जाने कितने दिनों से बरन वर्षों से मेरे साथ रहता है,[18] और जब से वह भाग आया, तब से आज तक मैंने उस में कोई दोष नहीं पाया (29:3)।

आकीश द्वारा दिए गए दाऊद के कामों के विवरण पर ध्यान दें: ''वह *भाग आया* है।'' दाऊद ने पलिश्तीन में ''एक चतुर सैनिक की युज़्ति'' या ''एक व्यावहारिक युज़्ति'' के रूप में मनाने की सोची होगी; आकीश ने इसे ''पलायन'' ही कहा। जब हम किसी दूर देश में चले जाते हैं, तो हम अपने उद्देश्यों के बारे में दूसरों को गुमराह कर सकते हैं, परन्तु वहां के लोग हमें हम से अधिक जानते हुए स्पष्ट देख सकते हैं।

यहां पर, परमेश्वर ने आगे बढ़कर दाऊद के ''मिशन इज़्पासिबल'' अर्थात असंभव कार्य को पलिश्तीनी सेना के सेनापतियों के द्वारा अंजाम दिया। दाऊद के लिए आकीश की सफ़ाई से उसके हाकिम संतुष्ट नहीं हुए।[19] उन्होंने आकीश को आज्ञा दी, ''उस पुरुष को लौटा दे'' (29:4)।

आकीश ने दाऊद को बुलाया[20] और उस बताया कि बेशक वह उस पर बिना किसी संदेह के भरोसा रखता है, परन्तु सेना के हाकिमों के कारण, दाऊद और उसके आदमियों को सिकलग में वापस जाना होगा। अपनी बात को गुप्त रखने के लिए दाऊद को विरोध करना पड़ा। परन्तु विरोध करने में भी अस्पष्टता थी: ''दाऊद ने आकीश से कहा, ... जब से मैं तेरे साज्हने आया तब से आज तक तू ने अपने दास से ज़्या पाया है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊं ?'' (29:8)। हो सकता है कि उसने ''अपने प्रभु राजा के शत्रुओं'' आकीश के शत्रुओं या शाऊल के शत्रुओं के लिए कहा हो।[21]

दाऊद की बात का जो भी अर्थ हो, उसने अवसर का लाभ उठाने में बिल्कुल समय नहीं गंवाया। अगली सुबह सूरज चढ़ते ही, वह और उसके आदमी सिकलग में वापस चले गए, और पलिश्ती लोगों ने शाऊल के साथ लड़ाई जारी रखी।[22]

घर लौटने पर दाऊद को अवश्य ही बड़ी राहत का अहसास हुआ होगा। फिर भी आकीश को धोखा देने और राजा की चापलूसी करने तथा उसका विश्वास जीतने के विचार से उसका विवेक दुखी हुआ होगा।[23]

यदि आप जीवन में निष्ठा न छोड़ें, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप जीवन में कुछ कर पाते हैं या नहीं; आप सफल माने जाएंगे। दूसरी ओर, यदि आप अपनी निष्ठा

छोड़कर, कुछ भी हासिल कर लें, तो भी यह आपकी असफलता ही गिनी जाएगी। इस प्रकार जीवन बिताने का निश्चय कर लें ताकि जीवन के अंत में आप कह सकें, ''मैं खराई से चलता रहा हूं'' (भजन संहिता 26:1-4)।

बदतर स्थिति के लिए उसने बुरी स्थिति छोड़ दी

दूर देश में दाऊद का जाना सिकलग में उसके और उसके आदमियों के वापस आने पर एक बड़ा धज़्का था।

> तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुंचा, तब उन्होंने ज़्या देखा, कि अमालेकियों ने दज़्खिन देश और सिकलग पर चढ़ाई की। और सिकलग को मार के फूंक दिया, ... इसलिए जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुंचा, तब नगर तो जला पड़ा था, और [उनकी] स्त्रियां और बेटे-बेटियां बन्धुआई में चली गई थीं। और दाऊद की दो स्त्रियां, ... बन्धुआई में गई थीं (30:1-3, 5)।

सिकलग से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए दाऊद हर रोज़ अमालेकियों पर आक्रमण करता था। आपको वहां के सब लोगों को मार डालने वाला नगर का दृश्य याद है? दादी कहा करती थी, ''जैसी करनी,वैसी भरनी।'' यहूदा और पलिश्तीन के दक्षिणी भागों[24] में अमालेकियों का आक्रमण नया नहीं था, परन्तु सिकलग को पहली बार जलाया गया था। दाऊद के फूंक-फूंक कर कदम रखने के बावजूद, अमालेकियों में अभी भी यह बात प्रसिद्ध थी कि दाऊद और उसके आदमी ही आगजनी और हत्याकांडों के लिए ज़िज़्मेदार थे।

अपनी कल्पना को फिर से दौड़ाएं। अपेक से सिकलग 70 या 80 मील दूर था। तीन दिन का यह बड़ा कठिन सफ़र होगा। अपने परिवारों को फिर से मिलने की इच्छा से दाऊद और उसके आदमी घर पहुंचने तक थक कर चूर हो चुके होंगे। परन्तु अंतिम चोटी पर पहुंचने पर, उन्हें देखकर विश्वास नहीं हो रहा था। नगर की जगह वहां केवल खण्डहर ही थे जिनमें से धुआं निकल रहा था। वे जल्दी से ढलान से उतरकर धुएं और टूटे हुए मकानों में से होते हुए, अपनी पत्नियों और बच्चों का नाम ज़ोर-ज़ोर से पुकार रहे थे। परन्तु उन्हें वहां कराहती हुई हवा और उड़ती हुई चिंगारियों के अलावा कुछ नहीं मिला।

इससे भी भयानक होने के भय से, वे लोग अपने हाथों से गर्म राख के ढेर से पत्थरों में हाथ मारते हुए, खोदते रहे जब तक कि उनके हाथों में छाले नहीं पड़ गए और वे थककर चूर नहीं हुए। उनके चेहरों पर काजल और राख की लकीरें बनाते हुए गर्म आंसू बह रहे थे। ''तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर उन में रोने की शज़्ति न रही'' (30:4)।

1993 के पतझड़ में, मेरे यह लिखते समय लॉस एंजिल्स के जंगल में कहीं-कहीं आग लगी हुई थी। हमने लोगों को अपने घरों की ओर लौटकर केवल नींवों से थोड़ा ऊंचे मकान ढूंढ़ते हुए देखा था। हमने उन लोगों को अपने सिर मारते और कहते सुना था कि, ''हम

बर्बाद हो गए। हमारा सब कुछ लुट गया।'' कई तो बेहोश ही हो गए थे। कुछ को हमने उस भयंकर आग में अपने लोगों के जीवित होने की आशा से ढूंढ़ते हुए देखा था। इन लोगों को दाऊद और उसके आदमियों की भावनाओं का अहसास होगा।

परन्तु सिकलग की त्रासदी खत्म नहीं हुई थी। वे लोग दाऊद की ओर देखते हुए एक दूसरे के कानों में कुछ कहने लगे। उनकी बातें दाऊद के कान में भी पड़ीं: ''यदि हम यहूदा में रहते तो ऐसा कभी न होता!''; ''उसे चाहिए था कि हमारे परिवारों की रखवाली के लिए कुछ लोगों को यहां छोड़ देता!''; ''सारा कसूर दाऊद का ही है!'' आयत 6 में पता चलता है, ''और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; ज़्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे।'' इस वाज़्यांश का अनुवाद ''दाऊद निराश हो गया'' हो सकता है। दाऊद उससे भी अधिक अकेला पड़ गया, जितना वह अदुल्लाम की गुफ़ा में पड़ा था (भजन संहिता 142:4)। ज़्योंकि वह उन्हीं लोगों के घेरे में आ गया था जो उसके आस पास रेंगते थे; अब वह हाथों में पत्थर लिए छह सौ क्रुद्ध लोगों से घिर गया था। वह शाऊल से बचने के लिए तो पलिश्तीन भाग गया था, परन्तु अब अपनी ही सेना के हाथों मरने वाला था।

उड़ाऊ पुत्र ने जब पहली बार घर छोड़ा था और चमकदार रोशनियों और तेज़ भीड़ में घिरा था, तो कोई संदेह नहीं कि उसे लगा था कि उसने सही निर्णय लिया है। परन्तु अधिक देर नहीं लगी जब वह दुरभावी, खतरनाक, सूअरों के बाड़े में घिर गया था,[25] जो अपनी हौदी में से उसके द्वारा छीने हर खाने को घूर रहे थे। दूर देश में यही होता है। यह भांड की हांडी को पहले आपके सामने झुलाता है और फिर पीछे खींच लेता है। नशे आपको आनन्द देने की प्रतिज्ञा करते हैं, और फिर आपका जीवन नरक बना देते हैं। घर से भागना स्वतन्त्रता देने की प्रतिज्ञा करता है, परन्तु अन्त में अकेलेपन और निराशा में धकेल देता है। तलाक लेना राहत भरा लगता है, फिर धीरे-धीरे हिनहिनाता है, ''परन्तु वास्तव में इसका अन्त नहीं होता!'' दूर देश की प्रतिज्ञाओं के धोखे में न आएं वरना आप भी विपज़ि के लिए नापसन्द स्थिति को छोड़ देंगे!

उसने नकारात्मक प्रभाव के लिए सकारात्मक को छोड़ दिया

हमें यह ज़ोर देना चाहिए कि दूर देश की नापंसद स्थिति में दाऊद अकेला नहीं गया; नापसन्द स्थिति बल्कि दूसरों को भी अपने साथ लेकर गया (30:2, 3)। दाऊद ने अपने आस पास जमा हुए छह सौ लोगों को साथ लिया। वे उसके बाद नगण्य व्यज़्तियों के रूप में, जिनके पास कोई काम न हो, आए थे और उसने उन्हें छापामार योद्धाओं का एक मजबूत दल बना दिया जो कहीं भी उसके साथ जाने को तैयार था (2 शमूएल 23:13-17)। दाऊद ने अपने साथ उनके परिवार और अपना परिवार भी लिया। इसके अलावा दाऊद की प्रतिष्ठा बढ़ने पर, इस्राएल के पड़ोसी गोत्रों में से दूसरे लोग भी सिकलग में उसके पास आ गए।[26] शुरुआती परिणाम यह हुआ कि वे सब मूर्तिपूजक लोगों में रहने को तैयार थे। अन्ततः, स्त्रियों और बच्चों को पकड़ लिया गया और पुरुषों का सर्वनाश हो गया था।

बहुत से लोग जो दूर देश में जाते हैं और अपने बारे में और अपनी इच्छाओं पर ही ध्यान देते हैं। उन्हें लगता है, ''मैं जो कुछ भी करता हूं, वह अपने लिए है। इससे किसी दूसरे को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।'' जबकि वास्तव में इससे दूसरों को फर्क पड़ता है। जब उड़ाऊ पुत्र घर से दूर चला गया था, तो उसने एक दुखी पिता को पीछे छोड़ दिया था। जब आप दूर देश में जाते हैं, तो आप सब कुछ दांव पर लगाते हैं। आप न केवल अपने प्राण को, बल्कि अपने निकट सज़्बन्धियों को भी दांव पर लगाते हैं। यदि दाऊद की तरह, आपका परिवार है, तो आप अपने परिवार को भी दांव पर लगाते हैं। बहुत से लोगों ने दूर देश जाने की अपनी यात्रा रद्द कर दी है ज़्योंकि अंत में ईमानदारी से उनके सामने यही प्रश्न था: ''इससे मेरे परिवार और मेरे मित्रों को ज़्या लाभ होगा?''

दूर देश जाने पर अस्थाई तौर रूप से चाहे जो भी राहत मिले, परन्तु अंत में उस राहत की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। उससे भी अच्छा ढंग यह है कि परमेश्वर के साथ रहें और पूरी तरह से उस पर भरोसा रखना सीखें।

परमेश्वर की ओर लौटना (1 शमू. 30:6-31)

परमेश्वर हमारे जीवन में परेशानियां आने देता है, हमें पीछे गिराने के लिए नहीं बल्कि घुटनों पर लाने के लिए जब। हम अपने घुटनों पर आ गए तो समझो कि हम अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। हाथों में पत्थर लिए हुए छह सौ लोगों द्वारा दाऊद को घेरने, अर्थात पूरी तरह से निराश। दाऊद के इस वर्ष और दाऊद के आधे जीवन में एक बात का उल्लेख हम बाइबल में नहीं पाते और वह है परमेश्वर का नाम। 30:6 के अंत में, हम पढ़ते हैं: ''परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बांधा।'' पहले, जब दाऊद ने हिज़्मत छोड़ी थी, तो योनातन ने ''परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया [मूलत:, उसका हाथ मजबूत किया]'' था (23:16)। अब दाऊद के साथ योनातन नहीं था।[27] परन्तु उसने अपने अन्दर झांककर पाया कि सामर्थ परमेश्वर से ही मिल सकती है (इफिसियों 3:20)।

जब दाऊद परमेश्वर की ओर लौट आया, तो हालात बेहतर हो गए। ज़्योंकि उसे और उसके आदमियों को कोई नहीं मिला था, इसलिए सज़्भवत: उनके परिवार अभी जीवित थे।[28] इसके अलावा दाऊद और उसकी सेना अभी जीवित थी और वे अमालेकियों का पीछा कर सकते थे। उन्हें अभी भी उज़्मीद थी। दाऊद ने फिर कुछ ऐसा किया जो उसे पलिश्तीन की ओर जाने का विचार करते समय करना चाहिए था: उसने ''यहोवा से पूछा'' (30:7, 8)। उसने परमेश्वर से पूछा, ''ज़्या मैं इस दल का पीछा करूं? ज़्या उसको जा पकड़ूंगा?'' परमेश्वर ने उज़र दिया, ''पीछा कर; ज़्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और नि:संदेह सब कुछ छुड़ा लाएगा'' (30:8)। दाऊद के मन की आशा पज़्की हो गई।

कार्य करने की पुकार छावनी में हो रहे विरोधी की सबसे अच्छी दवा थी। लोगों ने अपने पत्थर फैंक दिए, और हथियार उठा लिए, और दक्षिण की ओर दाऊद के साथ चल पड़े। परन्तु आदमी थक चुके थे। थोड़ी देर बाद ही दो सौ लोग हिज़्मत हार कर बैठ गए थे।

वह और दूसरे लोग भी हिज़्मत हारने वाले थे। उनके हथियार बहुत कम थे।[29] दाऊद को यह भी पता नहीं था कि अमालेकी कहां हैं; परन्तु परमेश्वर में अपने विश्वास के कारण, वह बचे हुए चार सौ लोगों को लेकर आगे बढ़ावा गया।

उसके विश्वास का प्रतिफल मिला। उन्हें एक मिसरी दास मिला जिसे उसके अमालेकी स्वामी ने त्यागकर मरने के लिए छोड़ दिया था। उन्होंने उसे सूखा फल और पानी दिया, जिसे खाने से उसमें ताजगी आई। परमेश्वर के प्रबन्ध के द्वारा, उस दास को पता था कि अपनी विजय का जश्न मनाने के लिए अमालेकी कहां गए हैं। वह इस्राएलियों को वहां ले गया।[30]

अमालेकी यह सोचकर कि उन्हें कोई खतरा नहीं है, लापरवाह हो गए थे। सारी रात खाने-पीने के साथ उन्होंने खूब रंगरलियां मनाईं। दाऊद और उसके आदमियों ने भोर होने तक विश्राम किया।[31] फिर, जब शत्रु सुस्त पड़ गया, तो उन्होंने उन पर धावा बोल दिया। बेशक अमालेकियों की संज़्या उन से कहीं अधिक थी,[32] परन्तु अपने परिवारों के बचाव के लिए क्रोध में आए लोगों का वे आसानी से शिकार हो गए। परमेश्वर ने कहा था कि दाऊद शत्रु पर विजय पा लेगा और ''सब कुछ छुड़ा लाएगा''-और ऐसा ही हुआ।

> और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया। वरन उनके ज़्या छोटे, ज़्या बड़े, ज़्या बेटे, ज़्या बेटियां, ज़्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उस में से कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; ज़्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया (30:18, 19)।[33]

जो लोग दाऊद पर पत्थर उठाने को तैयार थे, अब उनका सुर बदल गया था। उन्होंने इसे दाऊद की विजय के रूप में देखा और पुकार उठे, ''यह दाऊद की लूट है'' (30:20)। परन्तु दाऊद को मालूम था कि इस विजय का सेहरा परमेश्वर के नाम है। उसने कहा, ''तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे *यहोवा ने* हमें दिया है; और उसने हमारी रक्षा की, और उस दल को जिसने हमारे ऊपर चढ़ाई की थी हमारे हाथ में कर दिया है'' (30:23)। उसने उस माल को उन दो सौ लोगों में भी बांटा जो युद्ध में[34] और दक्षिणी यहूदा के नगरों में नहीं जा पाए थे।[35]

जब दाऊद को परमेश्वर की आवश्यकता थी तो वह उसके साथ था। इसमें एक सच्चाई है जो हमें बार-बार सुननी चाहिए कि हमारा परमेश्वर में दूसरा अवसर देने वाला है। उड़ाऊ पुत्र के पिता की तरह, जिसने उसे मिलने के लिए भागकर अपनी बाहों में ले लिया था, परमेश्वर ने फिर से दाऊद को अपनी स्नेही और सुरक्षित बाहों में ले लिया। दाऊद फिर आत्मिकता के मार्ग पर लौट आया।

मैं यह किसी को उकसाने के लिए नहीं कहता कि वह परमेश्वर को यह समझे कि जब तक हम चाहें, उसे नज़रअंदाज कर सकते हैं, जो हमारे उसके पास लौट आने पर अपने आप आशीष देगा। नहीं, बाइबल परमेश्वर को छोड़ने के खतरों के बारे में साफ बताती है

(इब्रानियों 6:4-6; 10:23-31; आदि)।बल्कि मैं तो यह किसी भी उस व्यक्ति को उत्साहित करने के लिए कहता हूं जो अपने आप को दूर देश में पाते हैं, जिन्हें लगता है कि अब बहुत देर हो चुकी है और कोई उम्मीद नहीं है। परमेश्वर के पास लौट आओ। उड़ाऊ पुत्र की तरह जो ''अपने आपे में आया'' (लूका 15:17), और अपने जीवन में पाप को मानें, इससे मन फिराएं (लूका 15:17-19, 21) और घर लौट आएं। परमेश्वर आपको स्वीकार करने को तैयार है!

घर लौटना (1 शमू. 2:1-4)

पिछली चरागाह में दाऊद एक साधारण व्यक्ति के रूप में था! गोलियत को मारने के बाद वह प्रसिद्ध हो गया था; दस वर्ष तक वह भगौड़ा रहा था। उसने आवश्यक सबक बड़ी कठिनाई से सीखे थे। उसने ''ठोकरों के स्कूल'' से ऑनर्स में डिग्री पाई थी। अब उसे राजा बनना था। अब उसके घर जाने का समय आ गया था।

2 शमूएल के आरम्भ में, दाऊद, उसके आदमी और उनके परिवार सिकलग में लौट आए थे।[36] वे वहां दो दिन तक रहे, नि:संदेह यह देखने के लिए कि वे क्या बचा सकते हैं, पुनर्निर्माण की योजनाएं बनाते हुए टूटे हुए घरों की ईंट-पत्थरों को इकट्ठा कर रहे होंगे। तीसरे दिन, एक अमालेकी[37] उनकी छावनी में आ गया। उसने बताया कि वह युद्ध के मैदान से आया है और शाऊल और योनातन मारे गए हैं।[38] दाऊद और उसके आदमी बड़े उदास हुए। दाऊद ने शाऊल और योनातन के लिए ''हाय, शूरवीर कैसे गिर पड़े हैं!'' शीर्षक से एक विलाप गीत लिखा।[39]

शाऊल की मृत्यु से दाऊद के लिए दो द्वार खुल गए। पहला, इससे स्वतन्त्रता का द्वार खुला। शाऊल की मृत्यु के कारण भागना छोड़कर दाऊद अपने लोगों के पास जा पाया। दूसरा इससे महल का द्वार खुला। दाऊद अब राजा बन सकता था। दाऊद कहता होगा ''कोई संदेह नहीं कि यह परमेश्वर ने ही किया है,'' और वह बिना किसी हिचकिचाहट के घर लौट गया होगा। दाऊद जो दूर देश में बच गया था, ने कहा, ''पहले मैं यह पता लगा लूं कि मेरे लिए परमेश्वर की यही इच्छा है।'' भगौड़े के रूप में सम्भवत: दाऊद ने यह सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा था। इससे उसे परमेश्वर के लोगों का अगुआ बनने की तैयारी मिल गई।

> इसके बाद दाऊद ने यहोवा से पूछा, ''क्या मैं यहूदा परदेश के किसी नगर में जाऊं?'' यहोवा ने उससे कहा, ''हां, जा।'' दाऊद ने फिर पूछा, ''किस नगर में जाऊं?'' उसने कहा, ''हेब्रोन में।'' तब दाऊद ... अपनी दोनों पत्नियों समेत वहां गया। दाऊद अपने साथियों को भी एक-एक के घराने समेत वहां ले गया; और वे हेब्रोन के गांवों में रहने लगे (2:1-3)।

हेब्रोन उन नगरों में से एक था जिनके लिए दाऊद ने उपहार भेजे थे (1 शमूएल 30:31), जो उसकी पहली राजधानी बनना था। दाऊद अंत में घर आ गया, घर जो दूर देश नहीं था।

सारांश

उड़ाऊ पुत्र घर आया और उसके पिता के घराने में उसे स्वीकार कर लिया गया था। दाऊद घर आया, और परमेश्वर ने उसे राजा बना लिया (2 शमूएल 2:4)। यदि आप दूर देश में हैं, तो मुझे आशा है कि उनके उदाहरणों से आज आपको घर लौटने की प्रेरणा मिलेगी।

दूर देश से घर आने से बढ़कर एक अच्छी बात है और वह है पहले वहां कभी नहीं जाना। यदि आप पर उस दूर देश में जाने की परीक्षा पड़े, तो मुझे आशा है कि उड़ाऊ पुत्र और दाऊद के साथ होने वाली घटनाओं पर विचार करके आपको शिक्षा मिलेगी। ज़रूरी नहीं कि उनकी तरह हर कोई घर लौट आए। उस देश की भूमि उन आत्मिक लाशों से जो कभी वापस नहीं आए, भरी पड़ी है।

यदि आप अपने आप को दूर देश में पाते हैं, तो आपके लिए परमेश्वर का वचन है ''मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर; परमेश्वर और उसके लोगों के पास लौट आ'' (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)। जब भी आप लौट सकते हैं, लौट आएं! दूसरी ओर, यदि आप दूर देश में जाने का विचार बना रहे हैं, तो रुककर इसके परिणामों पर विचार करें और न जाएं!

प्रवचन नोट्स

इस भाग की सामग्री का इस्तेमाल ''शत्रु के इलाके में रहना'' पर पाठ के लिए किया जा सकता है। दाऊद शत्रु के क्षेत्र में चला गया था; हम शत्रु के क्षेत्र में *पैदा* होते हैं जिसमें ''इस संसार के ईश्वर'' का राज है (2 कुरिन्थियों 4:4) हमें यह समझना चाहिए कि ''यह संसार हमारा घर नहीं है; हम तो परदेशी हैं'' (इब्रानियों 11:9, 10; 1 पतरस 2:11; आदि)। हम ''मरने तक'' शैतान से युद्ध करते हैं (तु. इफिसियों 6:11, 12)। दाऊद के जीवन के इस समय से हमें शत्रु के इलाके में रहने के कुछ संकेत मिल सकते हैं: (1) कभी संदेह न करें; कि हम शत्रु के क्षेत्र में रह रहे हैं। (2) इससे आपको अपने आस-पास मजबूत सहायकों को इकट्ठा करने में सहायता मिलती है। (3) जब हालात बदतर हों जाएं, तो याद रखें कि इससे भी बुरा हो सकता है। (4) बाधाएं आएंगी, परन्तु परमेश्वर पर और अपने जीवन में उसके उद्देश्यों पर ध्यान लगाए रखें। (5) कभी न भूलें कि आगे अच्छा समय आने वाला है (दाऊद की ताजपोशी-और हमारा जीवन के मुकुट को पाना)!

टिप्पणीयां

[1]दाऊद के पलिश्तीन में रहने का समय इतना निश्चित नहीं है जितना पहले लग सकता है। 1 शमूएल 27:7 की मूल भाषा में ''दिन और चार महीने'' है, जिसका अर्थ सज़्भवतया ''एक वर्ष और चार महीने है,'' परन्तु संकेत लज़्बा समय हो सकता है। इसकेअलावा, हो सकता है कि आयत 7 केवल दाऊद के सिकलग में रहने से कहानी तक रहने की बात कहती हो, या हो सकता है कि इसमें दाऊद के सिकलग में जाने से वहले का समय या कहानी में शाऊल की मृत्यु तक का समय शामिल न हो। परन्तु NASB की तरह हिन्दी की बाइबल

में दाऊद के पलिश्तीन में रहने का समय सोलह महीने ही है। [2]पलिश्तियों पर अधिक जानकारी के लिए, पृष्ठ .....(PAGE 36) पर लेख देखें। [3]नगर यहूदा के गोत्र की विरासत का भाग था (तु.यहोशू 13:3)। यहूदा ने तीन नगरों तथा उनके कुछ पहाड़ी क्षेत्र पर कब्ज़ाकर लिया (न्यायियों 1:18,19)। पांच नगरों के फिर से पलिश्तियों के कब्ज़े में आने में अधिक समय नहीं लगा (न्यायियों 3:1से)। [4]तु. 1 शमूएल 5:1, 2. परन्तु सन्दूक के कारण उन पर इतनी मुसीबतें आईं कि पलिश्तियों ने जितनी जल्दी हो रसका उसे अपने देश से निकाल दिया (1 शमूएल 6)। [5]सुझाव दिया गया है कि दाऊद को अपने छह सौ आदमियों तथा उनके परिवारों के लिए प्रबन्ध करना था। यह ज़िम्मेदारी दाऊद के लिए एक बड़ा बोझ था, और शायद उसे यही सोच रहती थी। परन्तु, हमें बताए विचारों में दाऊद ने अपने आप को और शाऊल से बचने की अपनी इच्छा को ही बताया है। [6]कैनथ बार्कर, सामा. संस्क., *द NIV स्टडी बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: 1985), 415. [7]अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि दाऊद और आकीश में समझौता हुआ था कि दाऊद तब तक सिकलग में रह सकता है जब तक वह आकीश को हमलों के बारे में बताता रहे *और* लूट में से उसे ज़ी दे। [8]यह बिना किसी प्रकार के अलौकिक बात का दावा किए केवल ''मनोरंजन का जादू'' है। [9]पहले भाग में ''बुरे वज़्त में कैसे कायम रहें'' पाठ देखें। [10]मुज़्य उद्देश्य लगता है कि आकीश को पता न चले कि दाऊद हमला करने के लिए कहां गया है (नोट 1 शमूएल 27:11)।

[11]सिकलग पलिश्तीन तथा इस्राएल के बीच पहाड़ियों के नीचे एक सीमावर्ती नगर था। मूलत: यह शिमोन के गोत्र का माना जाता था (यहोशू 19:5), परन्तु बाद में यहूदा का भाग बन गया (यहोशू 15:31)। [12]लेखक ने एक सज़्पादकीय टिप्पणी जोड़ दी, ''इस कारण से सिकलग आज के दिन तक यहूदा के राजाओं का बना है'' (1 शमूएल 27:6)। यदि यह टिप्पणी मूल लेख का भाग थी तो दस से हमें पता चल सकता है कि पुस्तक का यह भाग बाद के वर्षों में अंतिम रूप में रखा गया। [13]यहोशू 13:2 देखें। उन्हें यरदन के पूर्व में, उज़री कनान में रहने वाले गश्शूरियों के साथ न उलझाया जाए (2 शमूएल 15:8)। [14]1 शमूएल 30 में आक्रमण के संबंध में विवरणों तथा बाइबिल में अमालेकियों के बाद के हवालों से स्पष्ट है कि यह सही है। यदि शाऊल ने राजा को छोड़कर सब अमालेकियों को मार दिया था वे बहुत कैसे हो सकते थे (1 शमूएल 15:7-9)? स्पष्टतया शाऊल ने उन्हें ''शूर'' तक ही मारा था (1 शमूएल 15:7)। शायद शाऊल को परमेश्वर की आज्ञा इन लोगों के केवल एक भाग तक ही थी। [15]अमालेकी निर्गमन के समय से ही इस्राएल के शत्रु थे (निर्गमन 17:8-16) और हिज्जिकिया के शासन तक रहे थे (तु. 1 इतिहास 4:41, 43)। [16]अंग्रेजी बाइबिल NASB में इसका अनुवाद ''नेगेव/नेगेब'' भी है। ज़्योंकि यह क्षेत्र देश के दक्षिणी भाग में था (और है), ''दक्षिण दिशा'' के लिए अंग्रेजी बाइबिल में ''नेगेव'' शज़्द आया है-अनुवादक। [17]इस पाठ में, 1 शमूएल 28:3, 5-25 पर चर्चा नहीं की गई। प्रभु ने चाहा, तो शाऊल पर शृंखला में हम इस पर भी आएंगे। [18]''इब्रियों'' यहां इस्राएलियों के लिए इस्तेमाल किया गया है। शज़्द के सही-सही अर्थ पर विवाद है। पलिश्तियों के मुख से, यह शज़्द उपहास के तौर पर निकलता होगा। इस्राएली अप०ह्मनेआप को ''इस्राएली'' ही कहलाना पसंद करते थे, जो उन्हें परमेश्वर के साथ उनकी वाचा का स्मरण दिलाता था। परन्तु जो भाषा वे बोलते थे उसे ''इब्रानी'' भाषा कहा जाता था। [19]मूल लेख में ''दिन और वर्ष'' एक अस्पष्ट शज़्द है। इसका अर्थ कई वर्ष या केवल ''एक वर्ष से अधिक'' हो सकता है, जो 1 शमूएल 27:7 के हिन्दी अनुवाद में ''एक वर्ष चार महीने'' सही होगा। NIV में ''एक वर्ष से अधिक''; NEB में ''एक वर्ष या अधिक'' है। [20]उन्हें दस या इससे अधिक वर्ष पुराना गीत अभी भी याद था: ''दाऊद ने लाखों को मारा है'' (1 शमूएल 29:5)। एक पहले अवसर पर, पलिश्तीनी सेना में शामिल इस्राएली युद्ध के दौरान उनके विरुद्ध हो गए थे (1 शमूएल 14:21); वे अब दोबारा ऐसा नहीं होना देना चाहते। उन्हें लगा की दाऊद शाऊल का कृपापात्र बनने के लिए युद्ध में उनसे धोखा कर सकता है।

[21]आकीश ने अपनी बात आश्चर्यजनक वाज़्यांश से आरज़्भ की: ''यहोवा के जीवन की शपथ ...'' (1 शमूएल 29:6)। यहां ''यहोवा'' परमेश्वर के पवित्र नाम ''याहवेह'' के लिए है। शायद आकीश पहले दाऊद के परमेश्वर का नाम लेकर दाऊद के साथ बात करने के लिए शज़्दों को मधुर बना रहा था। [22] 1 शमूएल 29:10 में ''अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आए हैं'' कह कर आकीश ने ऐसे ही अस्पष्ट वाज़्यांश का इस्तेमाल किया था। ज़्या वह अपनेआप को उज़म पुरुष में ''प्रभु'' कह रहा था? कुछ लोगों का मानना है

कि वह उन इस्राएलियों की बात कर रहा था जो सिकलग में दाऊद के साथ मिले थे (1 इतिहास 12:19-21), जो शाऊल के सेवक थे। [23]पहला शमूएल 29:21 में टिप्पणी है कि ''पलिश्ती येजरेल को चढ़ गए।'' यहीं पर इस्राएलियों ने डेरे डाले हुए थे (29:1)। स्पष्टतया इस्राएली गिलबो पहाड़ पर भाग गए (1 शमूएल 31:1), जहां शाऊल और योनातन मारे गए थे (2 शमूएल 1:21 भी देखें)। [24]आकीश ने यह जोर देते हुए कि उसका मानना है कि दाऊद हर प्रकार से निर्दोष था, दाऊद की तुलना ''परमेश्वर के दूत'' (1 शमूएल 29:9) से की। [25]1 शमूएल 30:14, 16, 24. करेती (करेते के टापू के रहने वाले) पलिश्तियों के साथी थे (यहेजकेल 25:16; सपन्याह 2:5; आदि)। [26]यह मोटे, सुस्त सूअर नहीं थे जिन्हें हम जानते हैं। तीखे पतले ज़्लेड पर विचार करें जो आदमी का हाथ काट सकता है। [27]पहला इतिहास 12:1, 2, 20 विशेष तौर पर बताता है कि जब दाऊद सिकलग था तो बिन्यामीन और मनश्शै के गोत्रों के कुछ लोग उसके पास आए थे। उस अध्याय की आयत 22 कहती है, ''वरन प्रतिदिन लोग दाऊद की सहायता करने को उसके पास आते रहते थे, यहां तक कि परमेश्वर की सेना के समान एक बड़ी सेना बन गई''। [28]योनातन युद्ध के मैदान में, अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहा था।[29] 1 शमूएल 30:2 में हम पढ़ते हैं कि, दाऊद की तरह अमालेकियों ने सबको मारा नहीं, बल्कि वे दाऊद और उसके आदमियों के परिवारों को ''किसी को मारे बिना'' ले गए। अमालेकियों ने ऐसा शायद इसलिए किया होगा ज़्योंकि उन्होंने स्त्रियों से बलात्कार करने और स्त्रियों तथा बच्चों को मिसर में गुलाम बनाकर बेच डालने की की योजना बनाई थी, परन्तु पवित्र शास्त्र में यह संकेत मिलता है कि *परमेश्वर* ने उनके प्राण सुरक्षित रखे। [30]उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए सीकलग में कुछ भी नहीं बचा था।

[31]यह दाऊद द्वारा उसकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा के बाद की बात है। [32]1 शमूएल 30:17 में अनुदत शब्द ''रात के पहले पहर'' का अर्थ ''भोर'' या ''गोधूलि'' हो सकता है। ज़्योंकि यहूदी दिन का आरज़्भ सूर्यास्त से होता था, दाऊद संभवत: भोर से अंधकार होने तक, जिसका अर्थ ''अगला दिन'' है, तक लड़ता रहा होगा। [33]सेना की संज़्या हजारों में होने का सुझाव इन तथ्यों से मिलता है कि (1) वे छह सौ पुरुषों की पत्नियों तथा बच्चों को ले गए थे, (2) वे ''भूमि पर छिटके'' हुए थे (1 शमूएल 30:16), और (3) इससे यह अर्थ मिलता है कि बच जाने वाले चार सौ लोग (1 शमूएल 30:17) उनकी संज़्या का केवल एक भाग थे। [34]इस्राएल के आसपास के देशों पर दाऊद की यह पहली विजय थी। जैसा कि हम देखेंगे, अंतत: दाऊद ने इन सब देशों को अधीन कर लिया था। [35]यद्यपि गिनती 31:27 में यह आज्ञा दी गई थी कि पीछे ठहरने वालों को भी बराबर हिस्सा दिया जाना चाहिए (यहोशी 22:8 भी देखें), दाऊद की सेना के कुछ लोग उन दो सौ लोगों को केवल उनके परिवार ही देना चाहते थे। दाऊद ने व्यवस्था को याद दिलाया और उसे लागू किया, इस प्रकार इसे एक ''विधि और नियम'' ठहरा दिया (तु. 1 शमूएल 30:25)। जिन्हें लगता है कि हम प्रभु के कार्य के लिए बहुत कम सकते हैं, बाइबिल में 30:24 में उन्हें प्रोत्साहन करने वाली आयत मिलती है। [36]1 शमूएल 30:26-31 में जिन स्थानों का नाम है, उनमें से कुछ तो आज मिल सकती हैं, और कुछ नहीं। जो मिल सकते हैं उनके लिए ''जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था'' (आयत 31), अर्थात वे सभी स्थान जो दाऊद के भगौड़ा होने के समय के वर्षों पर हमने ध्यान दिया है, जोड़े जाने चाहिए। ये उपहार भेजकर दाऊद ने कई काम किए: उसने उनसे जिन्होंने बीते दस वर्षों में उसकी रक्षा की थी, ''धन्यवाद'' कहा। उसने बहुत से लोगों के साथ फिर से संबंध बनाए। उसने जोर दिया कि उसके शत्रु ''यहोवा के शत्रु'' (आयत 26) हैं, और उसके यह कहने का अर्थ था कि वे उसके भी शत्रु हैं। ये सब दाऊद को सिंहासन तक लाने के लिए परमेश्वर की योजना का भाग था। [37]मूलत: 1 और 2 शमूएल एक ही पुस्तक थी। 2 शमूएल की पुस्तक में दाऊद की कहानी जारी रहती है। [38]ज़्योंकि यह अमालेकीय उज़र से आया था, इसलिए उसे अपने लोगों के साथ दाऊद के हगाल ही के युद्ध का ज्ञान नहीं था। [39]इस अमालेकिय ने घायल राजा शाऊल की विनती पर उसे मारने का दावा किया था, परन्तु 1 शमूएल 31:4 कहता है कि शाऊल ने अपनेआप को खुद मारा। इस अमालेकिय ने दाऊद से कोई पुरस्कार पाने की आशा से, झूठ बोला होगा। यह सफाई करने वाला होगा जो शाऊल की मृत्यु के बाद आया और उसने शाऊल का मुकुट तथा ... चुरा लिया। दाऊद ने उसे ''यहोवा के अभिषिज़्त को मारने'' के कारण, मार दिया, सो अमालेकीय के झूठ के कारण उसे पुरस्कार के बजाय मृत्यु मिली। [40]इस्राएल के प्रसिद्ध लोग, भाग 1 में ''योनातन: ज़रूरत के समय काम आने वाला मित्र'' और ''जब मन बदला लेने को पुकारता है'' देखें।